

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 11, द लॉर्ड प्रोटेक्टर, ओलिवर क्रॉमवेल

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 11 है, द लॉर्ड प्रोटेक्टर, ओलिवर क्रॉमवेल।

इस विशेष उपदेश का शीर्षक है द लॉर्ड प्रोटेक्टर, ओलिवर क्रॉमवेल।

इसमें वाल्डेन्सियन लोगों की कहानी और कैसे क्रॉमवेल और उनके सचिव, जॉन मिल्टन, महान उत्पीड़न के समय के दौरान वाल्डेन्सियन को बचाने में मदद करने में बहुत प्रभावशाली थे, को शामिल किया गया है। हालाँकि, इसे शुरू करने के लिए, मैं 2 कुरिन्थियों को देखता हूँ, जो पहले पद के चौथे अध्याय से शुरू होकर सातवें पद तक जाता है। इसलिए, चूँकि यह ईश्वर की दया है कि हम इस मंत्रालय में लगे हुए हैं, इसलिए हम हिम्मत नहीं हारते।

हमने उन शर्मनाक बातों को त्याग दिया है जिन्हें कोई छिपाता है। हम चालाकी करने या परमेश्वर के वचन को झूठा साबित करने से इनकार करते हैं। लेकिन सच्चाई को खुलकर बयान करने के ज़रिए हम परमेश्वर की नज़र में हर किसी के विवेक के सामने खुद को पेश करते हैं।

और यदि हमारा सुसमाचार भी छिपा हुआ है, तो यह उन लोगों के लिए छिपा हुआ है जो नाश होने वाले हैं। उनके मामले में, इस संसार के परमेश्वर ने अविश्वासियों के मनो को अंधा कर दिया है ताकि वे सुसमाचार के प्रकाश और मसीह की महिमा को न देख सकें, जो परमेश्वर की छवि है, क्योंकि हम अपने आप को घोषित नहीं करते हैं।

हम यीशु मसीह को प्रभु के रूप में घोषित करते हैं और यीशु के कारण स्वयं को आपके दास के रूप में घोषित करते हैं। क्योंकि यह परमेश्वर ही है जिसने कहा, अंधकार में से ज्योति चमकने दो, जो हमारे हृदयों में यीशु के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति देने के लिए प्रकट हुआ था। लेकिन हमारे पास यह खजाना मिट्टी के बर्तनों में है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि यह असाधारण शक्ति परमेश्वर की है और हमसे नहीं आती है।

यह प्रभु का वचन है। भगवान का धन्यवाद। 17वीं सदी के मध्य में, ओलिवर क्रॉमवेल इंग्लैंड में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे और संभवतः पूरे यूरोप में सबसे शक्तिशाली प्रोटेस्टेंट नेता थे।

इंग्लैंड के राजा चार्ल्स I की सेना पर लगातार जीत के लिए इंग्लैंड की प्रोटेस्टेंट सेना का नेतृत्व करने के एक दशक के बाद, क्रॉमवेल की लोकप्रियता ने उन्हें देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचा दिया। उन्हें 1653 में इंग्लैंड के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में इंग्लैंड के राष्ट्रमंडल पर शासन करने के लिए चुना गया था। लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में अपने कार्यकाल के संक्षिप्त पाँच वर्षों के दौरान, क्रॉमवेल ने इंग्लैंड को लोकतांत्रिक सिद्धांतों को अपनाने की ओर अग्रसर किया जो आम आदमी के पक्ष में थे।

उस संक्षिप्त अवधि के दौरान, उन्होंने वाल्डेन्सियन के अस्तित्व को बचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। क्रॉमवेल आधुनिक यूरोपीय इतिहास के सबसे उल्लेखनीय शासकों में से एक थे, आंशिक रूप से इस तथ्य के कारण कि वे एक शक्तिशाली सैन्य और राजनीतिक नेता थे और आंशिक रूप से उनके व्यक्तित्व की जबरदस्त ताकत के कारण जिसने उनकी नेतृत्व शैली में विरोधाभास पैदा किया, जो क्रूरता और परोपकार के बीच झूलता रहा। एक सैन्य नेता के रूप में, वे एक शानदार रणनीतिकार थे।

वह अपने दुश्मन, कैथोलिकों, खासकर आयरलैंड में, के उत्पीड़न में भी उग्र और निर्दयी था। दूसरी ओर, अपने बाद के वर्षों में, उसने संसद में असहमति जताने वाले प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता की वकालत की। क्रॉमवेल ने अपने राजनीतिक सहयोगियों के प्रति दयालु स्वभाव दिखाया, लेकिन संसद के पटल पर उन्हें अपमानित करके अपने राजनीतिक दुश्मनों के साथ क्रूर भी था, और कुछ मामलों में, उसने सचमुच राजनीतिक विरोधियों को अपनी नीतियों के पक्ष में वोट देने के लिए मजबूर किया।

सत्ता में उनकी तीव्र वृद्धि और वाल्डेन्सियन के साथ उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को समझने के लिए, हमें सबसे पहले 1640 के दशक में इंग्लैंड को प्रभावित करने वाले मुद्दों का पता लगाना होगा। 1540 से 1640 के दशक तक, लगभग 100 वर्षों की अवधि के लिए, प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन के जवाब में, रोमन कैथोलिक चर्च ने प्रमुख प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रियों द्वारा उन पर लगाए गए कई आलोचनाओं को संबोधित करने और प्रोटेस्टेंट ईसाई बन गए कई धर्मांतरित लोगों को वापस आकर्षित करने के प्रयास में खुद को सुधारने के लिए जबरदस्त प्रयास किए थे। इस ऐतिहासिक अवधि को काउंटर-रिफॉर्मेशन कहा जाता था।

काउंटर-रिफॉर्मेशन के साथ-साथ, और उसके बाद के कई दशकों तक, कैथोलिक चर्च ने, यूरोप भर के कैथोलिक राजाओं के साथ मिलकर, जो पवित्र रोमन साम्राज्य का हिस्सा थे, प्रोटेस्टेंट रिफॉर्मेशन के व्यापक प्रभावों के खिलाफ सैन्य बल के साथ जवाबी कार्रवाई की। काउंटर-रिफॉर्मेशन के दौरान, और यूरोप के कई देशों में, पवित्र रोमन साम्राज्य में प्रोटेस्टेंट प्रभाव को खत्म करने के प्रयास में कैथोलिक सेनाओं द्वारा युद्ध और नरसंहार किए गए। इंग्लैंड में, राजा चार्ल्स I की नीतियों ने देश पर फिर से नियंत्रण पाने के लिए कठोर कैथोलिक शासन की मांग की।

राजा और उसके वफादारों ने खुद को प्रोटेस्टेंट-नियंत्रित संसद के तीव्र विरोध में पाया। परिणामस्वरूप, 1642 में इंग्लैंड में एक गृह युद्ध छिड़ गया, जो देश पर शासन करने के सबसे बुनियादी सवाल पर था। इस समय तक, क्रॉमवेल इंग्लैंड की प्रोटेस्टेंट सेना का प्राथमिक सैन्य नेता था।

वह और आम लोगों की उनकी सेना, नई मॉडल सेना, को उनके छोटे-छोटे कटे बालों और हाउस ऑफ लॉर्ड्स के साथियों बिशप और कैथोलिकों के संसदीय बहिष्कार के कारण उपहासपूर्वक राउंडहेड्स कहा जाता था। बदले में, राजा की सेना में बड़े पैमाने पर धनी ज़मींदार शामिल थे, और उनके सैनिकों का एक बड़ा प्रतिशत घोड़ों पर सवार था। प्रोटेस्टेंट, स्पेनिश

घुड़सवार सेना, कैबेलरोस से परिचित थे, जिन्होंने कुछ साल पहले डच प्रोटेस्टेंट के खिलाफ उत्पीड़न का एक क्रूर अभियान चलाया था, उन्होंने राजा चार्ल्स की सेना को कैबेलरोस के रूप में अपमानजनक रूप से संदर्भित करना शुरू कर दिया था।

अंग्रेजी में कैबेलरोस के लिए शब्द कैवलियर्स है, और यह प्रोटेस्टेंट सेना द्वारा प्रचलित एक उपहासपूर्ण शब्द था। हालाँकि, राजा चार्ल्स I को कैवलियर्स शब्द पसंद था, और जल्द ही राजा और वफादार घुड़सवारों ने उस शब्द, कैवलियर्स को सैन्य गौरव की उपाधि के रूप में अपना लिया। लेफ्टिनेंट-जनरल के रूप में क्रॉमवेल और उनके सह-कमांडर सर थॉमस फेयरफैक्स के नेतृत्व में, संसद की 20,000-मजबूत नई मॉडल सेना राजा की कैवलियर्स सेना का मुकाबला करने के लिए तैयार थी।

अपने शत्रुओं द्वारा धार्मिक उग्रवादी के रूप में वर्णित, क्रॉमवेल ने अपनी सेना को सख्त शुद्धतावादी अनुशासन के साथ संचालित किया, जिसमें भजन गाने, धर्मोपदेश सुनने और शराब पीने से परहेज करने का दैनिक अभ्यास शामिल था। राजभक्तों ने नए मॉडल की सेना का मज़ाक उड़ाया और प्रार्थना में उनके लगातार सिर हिलाने के लिए उन्हें नूडल्स कहा, लेकिन शुद्धतावादी अनुशासन ने प्रोटेस्टेंट सैनिकों को एक सुव्यवस्थित और अच्छी तरह से केंद्रित सेना बना दिया। राजा के सैनिकों के साथ युद्ध के बाद, नई मॉडल सेना विजयी हुई।

गृह युद्ध की निर्णायक लड़ाई 14 जून, 1645 को नेसेबी में हुई, जहाँ क्रॉमवेल के सैनिकों ने 5,000 कैदियों और 100,000 ब्रिटिश पाउंड के शाही गहनों के एक जखीरे को पकड़ा। उन्होंने राजा के निजी पत्राचार को भी बरामद किया, जिसकी सामग्री ने राजा के अपने प्रोटेस्टेंट विषयों के प्रति अंतिम विश्वासघात को प्रदर्शित किया। क्रॉमवेल और संसद में प्रोटेस्टेंट धार्मिक आक्रोश से भर गए और राजा की निंदा करने के लिए उनके निजी पत्राचार का इस्तेमाल किया।

क्रॉमवेल ने राजा के मृत्यु वारंट पर हस्ताक्षर करने के लिए संसद को धमकाया। उसने माफ़ी मांगने वालों को चिल्लाकर रोका, उन पर स्याही फेंकी, और एक मामले में तो उसने संदेह करने वाले व्यक्ति का हाथ तब तक दबाए रखा जब तक उसने हस्ताक्षर नहीं कर दिए। राजा के सभी वफादारों और सहयोगियों को राजा के मुकदमे से प्रतिबंधित कर दिया गया, जिसे प्राइड्स पर्ज के नाम से जाना जाता है।

कट्टर क्रॉमवेल ने राजा पर मुकदमा चलाया और उसे एक तानाशाह, देशद्रोही, हत्यारा और इस देश के अच्छे लोगों का सार्वजनिक दुश्मन करार दिया। राजा चार्ल्स I को लोगों के खिलाफ किए गए अपराधों के लिए सिर काटकर मौत की सजा सुनाई गई। हालाँकि, इस फांसी का इंग्लैंड के लोगों पर बहुत बुरा असर हुआ।

उनकी फांसी देखने के लिए एकत्र हुई भीड़ अपने ही राजा की मौत की सजा को लागू होते देखकर दंग रह गई। एक अंग्रेजी राजा को फांसी देने का विचार ही आम लोगों को सबसे ज्यादा परेशान करने वाला था, भले ही वे उसके शासनकाल के कई फैसलों से असहमत थे। चार्ल्स I एकमात्र अंग्रेजी राजा था जिसे कभी भी मुकदमे में दोषी ठहराया गया और उसे फांसी दी गई।

चार्ल्स I की फ्रांसी अंग्रेजी इतिहास की सबसे उल्लेखनीय घटना थी, और इसे अंजाम देने वाला व्यक्ति, ओलिवर क्रॉमवेल, सबसे उल्लेखनीय व्यक्ति था। प्रोटेस्टेंट के नेता, क्रॉमवेल, अभिजात वर्ग पर विजयी हुए और राष्ट्र पर कठोर धार्मिक नियंत्रण लगाया, जो क्रॉमवेल के गहरे और कठोर कैल्विनवाद को दर्शाता है। चार्ल्स I की फ्रांसी के बाद वोटों की एक श्रृंखला के परिणामस्वरूप राजशाही और संसद के हाउस ऑफ लॉर्ड्स दोनों को समाप्त कर दिया गया, और मई 1649 में, इंग्लैंड को एक राष्ट्रमंडल घोषित किया गया।

अगले दो वर्षों में, क्रॉमवेल ने आयरलैंड में आयरिश कैथोलिक विद्रोह को दबाने के लिए क्रूर अभियान चलाया। उनके सैनिकों ने पूरे गाँवों का नरसंहार किया और कैथोलिकों के खिलाफ़ इतने क्रूर थे कि आयरिश कैथोलिकों में क्रॉमवेल के नाम के प्रति नाराजगी आज भी मौजूद है। छह साल के अंग्रेजी गृहयुद्ध के दौरान, क्रॉमवेल के नेतृत्व में प्रोटेस्टेंट राउंडहेड्स लगातार तीस लड़ाइयों में विजयी रहे, जबकि कैवलियर्स को एक भी जीत नहीं मिली।

छह साल के गृहयुद्ध के दौरान, जब भी क्रॉमवेल मैदानी लड़ाई से विजयी होकर लंदन लौटे, तो उनकी सैन्य प्रतिभा की हर जगह प्रशंसा की गई। नतीजतन, क्रॉमवेल को उनके कई अनुयायियों ने ब्रिटिश ताज लेने के लिए बार-बार आग्रह किया, लेकिन उन्होंने दृढ़ता से और बार-बार इनकार कर दिया, इस बात पर जोर देते हुए कि राज्याभिषेक उन सभी बातों के खिलाफ होगा, जिनका वे लोगों के नेता और लोकतंत्र और प्यूरिटनवाद के मूल सिद्धांतों के रक्षक के रूप में समर्थन करते हैं। दिसंबर 1653 में, क्रॉमवेल को इंग्लैंड का लॉर्ड प्रोटेक्टर चुना गया, और जब उन्होंने अपनी उपाधि स्वीकार की, तो उन्होंने इस घटना को राज्याभिषेक के रूप में न देखे जाने के लिए सादे काले कपड़े पहने।

राजनीतिक सत्ता के हाशिये से, सैन्य कमांडर क्रॉमवेल ने एक सख्त कैल्विनिस्ट के रूप में धार्मिक सुधार को बढ़ावा दिया। लेकिन एक बार जब वह संसद के नेतृत्व के लिए चुने गए, तो क्रॉमवेल ने राष्ट्र के भीतर उदारवादी नियमों और प्रगतिशील सुधारों की एक श्रृंखला लागू की, जिससे बढ़ते मध्यम वर्ग को शक्ति और अवसर का पुनर्वितरण हुआ। क्रॉमवेल केवल सोलह महीनों के लिए इंग्लैंड के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में सेवा कर रहे थे, जब उसी वर्ष मई की शुरुआत में वाल्डेन्सियन के 1655 ईस्टर नरसंहार की खबर उनके घरों में पहुँची।

क्रॉमवेल और उनके सचिव जॉन मिल्टन ने तत्परता से प्रतिक्रिया दी और जल्द ही, नरसंहार की खबर पूरे यूरोप के प्रोटेस्टेंट देशों में गूँज उठी। यह ओलिवर क्रॉमवेल और वाल्डेन्सियन लोगों के बीच का मिलन बिंदु है, 1630 के दशक में कॉटियन आल्प्स में वाल्डेन्सियन आबादी को तबाह करने वाले ब्लैक प्लेग के परिणामस्वरूप, सोलह में से चौदह स्थापित वाल्डेन्सियन पादरी मर गए, जिससे पूरे क्षेत्र में पूरे विश्वास वाले समुदाय आध्यात्मिक नेतृत्व से वंचित हो गए।

जिनेवा से सहायता के लिए की गई अपील के जवाब में, स्विस रिफॉर्म चर्च ने जिनेवा के सेमिनरी से चौदह नए फ्रेंच-भाषी हुगुएनोट पादरियों को वाल्डेन्सियन पैरिशों के खाली पल्पिट को भरने के लिए भेजा। अगले दो दशकों में, वाल्डेन्सियन समुदायों के बीच तनाव बढ़ गया, जिसका नेतृत्व मुखर स्विस रिफॉर्म पादरियों ने किया, उनके कैथोलिक संप्रभु, ड्यूक ऑफ सेवॉय के खिलाफ, जो अपने वाल्डेन्सियन विषयों को धार्मिक और राजनीतिक खतरे के रूप में देखते थे। समय के

साथ, हाउस ऑफ सेवॉय ने 1561 में कैवूर की संधि में वाल्डेंसियनों को दी गई स्वतंत्रता को तेजी से दबा दिया।

1650 के दशक की शुरुआत में, वाल्डेंसियन विषयों के प्रति कैथोलिक ड्यूक की सहिष्णुता के परिणामस्वरूप वाल्डेंसियनों पर उनके गृहभूमि में और उसके आस-पास सख्त प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया गया। 1,000 से अधिक वाल्डेंसियन परिवार जो अपने गृहभूमि के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने के लिए विस्तारित हुए थे, उन्हें वापस उस भौगोलिक सीमा में जाने के लिए मजबूर किया गया जिसे वाल्डेंसियन यहूदी बस्ती के रूप में जाना जाता है। गुस्सा भड़क गया, और दोनों पक्षों में विवाद पैदा हो गए और जल्द ही हाउस ऑफ सेवॉय ने मारकिस डी पिएनेसे के नेतृत्व में 4,000 सेवॉयर्ड सैनिकों को घाटियों में जाने का आदेश देकर जवाब दिया, जिसका अप्रकाशित लक्ष्य सभी वाल्डेंसियनों को पूरी तरह से हटाना और उनके गृहभूमि को कैथोलिक वफादारों से फिर से आबाद करना था।

पिएनेसे एक बेईमान और अप्रभावी सैन्य कमांडर था, और उसके अनुशासनहीन नेतृत्व ने बाद में वाल्डेंसियन के खिलाफ उनके आदेशों के निष्पादन में अराजकता और तबाही मचाई। पिएनेसे के सेवॉयर्ड सैनिकों में गुस्साए आयरिश कैथोलिक सैनिकों की एक कंपनी भी शामिल थी, जो कुछ साल पहले क्रॉमवेल की सेना द्वारा आयरिश कैथोलिकों के क्रूर उत्पीड़न का बदला लेने के लिए अपने मन में थे। पिएनेसे और उसके कमांडरों ने वाल्डेंसियन समुदायों में घुसपैठ करने के लिए एक गुप्त योजना तैयार की थी, जिसमें प्रत्येक वाल्डेंसियन घराने को अपने घरों में सैनिकों को रखने के लिए मजबूर किया गया था, इस वादे के साथ कि शांतिपूर्ण समाधान के लिए बातचीत आगे बढ़ेगी।

हालांकि, वाल्डेंसियन नागरिकों के घरों में तैनात सैनिकों को ईस्टर की सुबह 12 अप्रैल, 1655 को सुबह 4 बजे उठने के लिए अलर्ट पर रखा गया था, और उन्हें अपने घरों में हर वाल्डेंसियन पुरुष, महिला और बच्चे को मारने का आदेश दिया गया था। इस आदेश का उस सुबह ल्यूसेर्ना घाटी में क्रूरतापूर्वक पालन किया गया और उसके बाद तीन सप्ताह तक आतंक का शासन चला, जिसके परिणामस्वरूप वाल्डेंसियन मातृभूमि में कई हजार लोगों की हत्या हुई। वाल्डेंसियन बच्चे लोगों ने खबर को जिनेवा तक पहुँचाया, और ईस्टर नरसंहार के तीन सप्ताह के भीतर, खबर इंग्लैंड और ओलिवर क्रॉमवेल तक पहुँच गई थी।

क्रॉमवेल ने वाल्डेंसियनों के नरसंहार का विवरण देते हुए एक पूरी रिपोर्ट लिखित रूप में मंगवाई, और नीचे क्रॉमवेल को प्रस्तुत आधिकारिक निष्कर्षों का एक अंश है। उम्र या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया गया, भले ही बच्चे हों। चाहे वे अमीर हों या गरीब, शिक्षित हों या नहीं, इसके बाद जो विश्वासघात हुआ, उसमें कई ऐसे लोग शामिल थे जिनके घर उनके साथ जल गए।

कुछ लोगों को पैरों से लटका दिया गया, दूसरों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। कुछ को काट-छांट कर घायल कर दिया गया, और फिर उनके घावों पर नमक और मिर्च डाली गई, और फिर से उनकी कमीज़ें पहना दी गईं। कुछ लोगों को नंगा करके कई अन्य लोगों के साथ बांध दिया गया और पहाड़ों से नीचे गिरा दिया गया।

कुछ को जमीन पर कीलों से ठोंक दिया गया, दूसरों को खूँटे पर लटका दिया गया। कई महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया और फिर उनके सिर काट दिए गए। बच्चों को पहाड़ों से नीचे फेंक दिया गया और दूसरों को सैनिकों ने खींचकर अलग कर दिया।

बच्चों को हवा में उछाला गया और कुछ सैनिकों की भालों पर सींग मारे गए। लुसेर्ना घाटी, पेलिसी घाटी में काम पूरा करने के बाद, वे पेरू, चिसोन घाटी और सैन मार्टिन- जर्मनोस्का घाटी की घाटियों में चले गए, जहाँ उन्होंने लोगों को आदेश दिया कि वे सामूहिक प्रार्थना में भाग लें या 24 घंटे में निर्वासन का सामना करें। जब पूरे प्रोटेस्टेंट यूरोप में इस नरसंहार की सीमा और वाल्डेन्सियन के खिलाफ़ तीन हफ़्ते के आतंक के शासन के बारे में जानकारी मिली, तो राष्ट्रों के नेताओं और नागरिकों में बहुत आक्रोश था, जो प्रोटेस्टेंटवाद से जुड़े थे।

क्रॉमवेल के निजी सचिव कवि और लेखक जॉन मिल्टन थे। 1640 के दशक से ही मिल्टन ने सबसे प्राचीन सुधार चर्चों, वाल्डेन्सिस का अध्ययन किया था। अपने अध्ययनों से, उन्होंने प्राचीन ईसाई धर्म के सच्चे चर्च की उत्पत्ति से उनके संबंधों का अनुमान लगाया।

वाल्डेन्सियन घाटियों में गवाहों की रिपोर्ट पढ़ने के बाद, जिन्होंने दर्ज अत्याचारों को देखा था, मिल्टन ने क्रॉमवेल से स्वीडन, डेनमार्क, हॉलैंड, स्विटजरलैंड और ट्रांसिल्वेनिया के प्रोटेस्टेंट नेताओं को कड़े शब्दों में फरमान लिखे, जिसमें हाउस ऑफ़ सेवॉय पर बहुत अधिक कूटनीतिक दबाव डालने की क्रॉमवेल की रणनीति के लिए नैतिक और भौतिक समर्थन जुटाने की सीमा थी। इन देशों की प्रतिक्रिया तेज और जोरदार थी। मिल्टन ने सेवॉयर्ड सैनिकों के खिलाफ़ लगाए गए अत्याचारों का बहुत विस्तृत विवरण भी लिखा और हाउस ऑफ़ सेवॉय के नेतृत्व पर तीखा और कटु आरोप लगाया।

ड्यूक के खिलाफ़ यूरोप में प्रोटेस्टेंट नेताओं की एकजुट और जोरदार प्रतिक्रिया सेवॉय के घराने के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित थी। मिल्टन ने पीडमोंट में हुए नरसंहार पर प्रसिद्ध सॉनेट भी लिखा, जो इस प्रकार है: हे प्रभु, अपने मारे गए संतों का बदला लो जिनकी हड्डियाँ अल्पाइन पहाड़ों पर ठंडी पड़ी हैं। तब भी, जिसने अपने सत्य को इतना पवित्र रखा जब हमारे सभी पूर्वज लकड़ी और पत्थरों की पूजा करते थे, अपनी पुस्तक में उनकी कराहों को दर्ज करना मत भूलना।

तुम्हारी भेड़ें कौन थीं, और अपने पुराने बाड़े में खूनी पीडमोंटियों द्वारा मारी गईं, जिन्होंने माँ को शिशु के साथ चट्टानों से नीचे लुढ़काया, उनकी कराह पहाड़ियों की ओर दुगुनी हो गई, और वे स्वर्ग की ओर। उनके शहीद हुए खून और राख को ऐसा ही लगा, या सभी इतालवी खेत शांत हो गए, तिहरे तानाशाह को नियंत्रित करें ताकि इनसे सौ गुना वृद्धि हो सके। जिन्होंने तुम्हारा मार्ग जल्दी सीख लिया है, वे बेबीलोन के दुख से बच सकते हैं।

क्रॉमवेल को वाल्डेन्सियनों के लिए बहुत दया आई और सेवॉयर्ड सैनिकों द्वारा किए गए वाल्डेन्सियन नरसंहार की रिपोर्ट से वह बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने प्रोटेस्टेंट ब्रिटेन में ड्यूक से मिलने के लिए राजनयिक दर्जा प्राप्त एक विशेष दूत सर सैमुअल मोरलैंड ट्यूरिन को भेजा। क्रॉमवेल ने पीडमोंट की घाटी में रहने वाले प्रोटेस्टेंटों के खूनी और बर्बर नरसंहार के बारे में

इंग्लैंड के राष्ट्रमंडल के लॉर्ड प्रोटेक्टर, महामहिम को भेजे गए पत्रों के संग्रह नामक पूरी रिपोर्ट का आदेश दिया।

और उन्होंने इसे हर प्रोटेस्टेंट पैरिश में प्रसारित और पढ़े जाने का आदेश दिया। इसे अन्य यूरोपीय नेताओं के साथ भी साझा किया गया। मिल्टन के सॉनेट के साथ इस दस्तावेज़ ने ड्यूक ऑफ़ सेवॉय के अपने ही लोगों के साथ व्यवहार की निंदा करने वाले प्रोटेस्टेंट यूरोप को एकजुट करने का प्रभाव डाला।

क्रॉमवेल ने ईस्टर नरसंहार के पीड़ितों की याद में 14 जून, 1655 को उपवास, अपमान और प्रार्थना का दिन निर्धारित करने का भी आदेश दिया। उसी दिन, क्रॉमवेल ने परेशान और सताए गए वाल्डेन्सियनों की राहत के लिए उदार संग्रह का आह्वान किया, जो अगर अभी भी जीवित थे, तो अपनी पत्नियों और अपने छोटे बच्चों के साथ भूख, ठंड और नग्नता में भटक रहे थे। पूरे यूरोप में, नरसंहार की खबरें और कई अत्याचार की कहानियों का विवरण जनता के साथ व्यापक रूप से साझा किया गया था, और उन देशों के नागरिकों ने अपनी सरकारों से हाउस ऑफ़ सेवॉय और उसके अपने विषयों के साथ क्रूर व्यवहार पर कूटनीतिक दबाव डालने का आग्रह किया।

बहुराष्ट्रीय प्रतिक्रिया की तत्परता और हाउस ऑफ़ सेवॉय के अपने ही नागरिकों के साथ किए गए व्यवहार की निंदा ने ड्यूकल कोर्ट को आश्चर्यचकित कर दिया और उन्हें पूरी तरह से चौंका दिया। मिल्टन ने लैटिन में एक भाषण तैयार किया जिसे मोरलैंड द्वारा हाउस ऑफ़ सेवॉय में दिया जाना था। इसमें, उन्होंने सभी कूटनीतिक संयम को त्याग दिया और ड्यूक के अपने ही नागरिकों के साथ किए गए व्यवहार के खिलाफ अपना पूरा गुस्सा दिखाया।

निम्नलिखित अंश पत्र के लहजे को व्यक्त करता है। ओह, जले हुए घर जो अभी भी धुआँ उगल रहे हैं, फटे हुए अंग, खून से सनी हुई ज़मीन। स्वर्गदूत भय से काँप उठते हैं।

पुरुष चकित हैं। स्वर्ग भी मरते हुए लोगों की चीखें सुनकर चकित है और धरती भी शरमा रही है। कुँवारियाँ मोहित हो रही हैं।

नरभक्षण। बिस्तर पर पड़े बूढ़ों को जिंदा जला दिया जाता था। शिशुओं को चट्टानों पर पटक दिया जाता था या उनका गला काट दिया जाता था।

ये और अन्य भयावहताएँ भाषण में सूचीबद्ध हैं। मॉरलैंड ने ड्यूकल कोर्ट के सामने इस भाषण को इन शब्दों के साथ पढ़कर समाप्त किया। हे सर्वोच्च ईश्वर, इतनी बड़ी दुष्टता और भयानक खलनायकी के कारण शरण या बदला मत लो।

हे मसीह, अपने खून से इस खून को धो डालो। उस समय इक्कीस साल के ड्यूक ऑफ़ सेवॉय चार्ल्स इमैनुएल द्वितीय खुद राजनीतिक रूप से नपुंसक थे। उनकी माँ मैडम रॉयल ने स्थिति को संभाला और रिपोर्ट की सत्यता के बारे में संदेहपूर्ण संदेह के साथ हाउस ऑफ़ सेवॉय की ओर से जवाब दिया।

यहां तक कि फ्रांस पर भी इंग्लैंड ने दबाव डाला कि वह दोनों देशों के बीच एक अलग संधि को रोककर रखे ताकि सेवॉय और वाल्डेन्सियन के बीच समझौता हो सके। लेकिन सेवॉय के घराने ने बातचीत के किसी भी प्रयास को कुशलतापूर्वक टाल दिया। कूटनीतिक समझौते की प्रतीक्षा करते हुए, वाल्डेन्सियन के लिए अनुकूल परिणाम पर दबाव डालने के लिए, क्रॉमवेल ने स्विस् से सेवॉय के खिलाफ हमला करने का आग्रह भी किया।

लेकिन स्विस् लोग हाउस ऑफ सेवॉय के साथ गृह युद्ध से चिंतित थे क्योंकि उनके कई दक्षिणी कैंटन सेवॉय द्वारा नियंत्रित प्रांतों में थे। कई सप्ताह बीत गए और प्रोटेस्टेंट राजनयिकों ने एक त्वरित संधि के पारित होने के लिए दबाव डाला। अगस्त 1655 के अंत में, हाउस ऑफ सेवॉय ने एक तरह के युद्धविराम का प्रस्ताव रखा, जिस पर अनिच्छा से हस्ताक्षर किए गए। प्रोटेस्टेंट राजनयिकों द्वारा इस प्रस्ताव को वाल्डेन्सियन के लिए स्पष्ट रूप से असंतोषजनक माना गया।

क्रॉमवेल को देरी हो गई थी और वह मात खा गया था। कूटनीतिक विफलता से निराश क्रॉमवेल ने वाल्डेन्सियन शरणार्थियों को आयरलैंड में उन भूमियों में बसने का प्रस्ताव दिया, जिन्हें उसने और उसके सैनिकों ने कुछ साल पहले जीत लिया था। विडंबना यह है कि ये भूमि पहले आयरिश कैथोलिकों के स्वामित्व में थी, और उनके निवासियों को उत्तरी आयरलैंड के एक भारी कैथोलिक क्षेत्र में प्रोटेस्टेंट सेना की क्रूरता से मार दिया गया था या निर्वासित कर दिया गया था।

हालांकि, वाल्डेन्सियन किसी भी ऐसी बस्ती योजना में रुचि नहीं रखते थे जो उन्हें उनकी प्यारी मातृभूमि से दूर ले जाए। बाद में चिंतन। जॉन मिल्टन ने वाल्डेन्सियन लोगों के बारे में अपने समय और समय में उपलब्ध एकमात्र इतिहास को पढ़ने से दृढ़ता से विश्वास किया, जिसे पियरे गिल्स ने लिखा था और 1644 में प्रकाशित किया था, जो इस दावे का समर्थन करता था कि वाल्डेन्सियनवाद की जड़ें चौथी शताब्दी ईस्वी और कॉन्स्टेंटाइन द्वारा पोप सिल्वेस्टर को दिए गए दान तक जाती हैं।

मिल्टन और क्रॉमवेल दोनों का दृढ़ विश्वास था कि वाल्डेन्सियन ही सच्चे चर्च थे, जिनकी उत्पत्ति प्राचीन काल में हुई थी। शुद्धतावादी प्रोटेस्टेंटवाद के प्रति उनके गहरे जुनून ने उन्हें यह विश्वास दिलाया था कि सताए गए वाल्डेन्सियनों की रक्षा ही सच्चे ईसाई धर्म की रक्षा थी। प्रोटेस्टेंट राष्ट्राध्यक्षों के साथ मिल्टन के पत्राचार और प्रोटेस्टेंट यूरोप में क्रॉमवेल के निर्णायक और जोरदार राजनीतिक नेतृत्व का मतलब था कि प्रोटेस्टेंट यूरोप भी यह मानने लगा था कि वाल्डेन्सियन ईसाई धर्म के प्राचीन रक्षक भी थे।

उनके समय में यह व्यापक रूप से माना जाता था कि वाल्डेन्सियन पर हमला मसीह के शरीर पर हमला था। दूसरे शब्दों में, क्रॉमवेल और मिल्टन दोनों का मानना था कि वाल्डेन्सियन का बचाव करना ईसाई धर्म के सार की रक्षा करना था। इस तथ्य को समझने से ही हम अपने समय में यूरोपीय राजनीति और सत्ता पर क्रॉमवेल और मिल्टन के प्रभाव की गहरी प्रासंगिकता को समझ सकते हैं।

क्रॉमवेल के सशक्त नेतृत्व में, मिल्टन की बुद्धि और उनकी कलम की शक्ति के माध्यम से जनता की भावनाओं को प्रभावित करने के लिए, प्रोटेस्टेंट यूरोप वाल्डेन्सियन शरणार्थियों की रक्षा में एक शक्तिशाली बल के रूप में एकजुट हुआ। अपने समय और समय में, प्रोटेस्टेंट कूटनीतिक

एकता का यह स्तर यूरोपीय इतिहास में अभूतपूर्व था। हमारे आधुनिक समय की संवेदनाओं के अनुसार, हम क्रॉमवेल के व्यक्तित्व और उनके राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व में काम करने वाली विसंगतियों और दोहरे मानदंडों को आसानी से पहचान सकते हैं।

वही व्यक्ति जिसका सैन्य नेतृत्व पूरे कैथोलिक समुदायों को क्रूर और विनाशकारी बल के साथ नष्ट करने का आदेश देता था, फिर कुछ ही वर्षों में पलट जाता था और इंग्लैंड में हर प्रोटेस्टेंट चर्च के वित्तीय समर्थन का समन्वय करता था और सताए गए वाल्डेन्सियनों की रक्षा के लिए पूरे यूरोप में प्रोटेस्टेंट राष्ट्रों के राजनीतिक हस्तक्षेप को प्रेरित करता था। 17वीं सदी के इंग्लैंड में धार्मिक स्वतंत्रता की मांग कर रहे विभिन्न प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में उनकी सहिष्णुता ने धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों के ब्रिटिश विकास पर दूरगामी प्रभाव डाला। जबकि संसद में अपने राजनीतिक विरोधियों के प्रति उनकी असहिष्णुता, जिन्हें बेरहमी से निशाना बनाया गया और सार्वजनिक रूप से उनका उपहास किया गया, ने एक क्रूर राजनीतिक तानाशाह की रणनीति का प्रदर्शन किया।

अपने शुद्धतावादी विश्वास के प्रति अपने उत्कट जुनून में, क्रॉमवेल पूरे कैथोलिक समुदायों के साथ अपने कठोर व्यवहार और विनाश के प्रति अंधे हो गए थे। हालांकि, क्रॉमवेल काउंटर-रिफॉर्मेशन के बीच में रहते थे, जब रोमन कैथोलिक चर्च पूरे प्रोटेस्टेंट समुदायों के नरसंहार में उतना ही या उससे भी अधिक शामिल था। रोमन कैथोलिक धर्म प्रोटेस्टेंटवाद का एक घातक और खतरनाक दुश्मन था, जैसा कि वाल्डेन्सियन पर बर्बर नरसंहार अधिनियम में प्रमाणित है।

न तो कैथोलिक और न ही प्रोटेस्टेंट ने एक दूसरे के प्रति मसीह की शांति का उदाहरण पेश किया। बल्कि, दोनों पक्ष शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए ईश्वर की इच्छा से पीछे रह गए। कई मायनों में, ओलिवर क्रॉमवेल इंग्लैंड में एक शानदार सैन्य और राजनीतिक नेता थे और निस्संदेह उन्होंने अपने 850 साल के इतिहास में सबसे कमजोर और खतरे वाले बिंदुओं में से एक पर वाल्डेन्सियन के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में कार्य किया।

1650 के दशक के अंत में वाल्डेन्सियन के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रोटेस्टेंट अधिवक्ताओं के रूप में काम करने वाले क्रॉमवेल और मिल्टन के बिना, एक राष्ट्र के रूप में उनका अस्तित्व कहीं अधिक खतरनाक भविष्य का सामना कर रहा होता। संक्षेप में, क्रॉमवेल ब्रिटिश और यूरोपीय इतिहास में एक पहेली थे। अपने विश्वास के मूल में, वह ईश्वर और लोगों के सामने विनम्र रहे, जैसा कि कई राजनीतिक कार्यकर्ताओं और नागरिकों से समान रूप से मजबूत और निरंतर प्रोत्साहन के बावजूद इंग्लैंड के ताज को स्वीकार करने से उनके बार-बार इनकार में प्रदर्शित हुआ।

भले ही उन्होंने अपने राजनीतिक विरोधियों के साथ व्यवहार में सत्ता का दुरुपयोग किया और अपने समय में अनिर्णीत राजनेताओं के खिलाफ बहुत दबाव डाला, लेकिन वे एक प्रगतिशील राजनेता थे, जिनका लक्ष्य आम लोगों के लिए लोकतंत्र को आगे बढ़ाना था। अंतिम विश्लेषण में, इंग्लैंड के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में क्रॉमवेल के छोटे से पांच साल के शासनकाल के दौरान और वाल्डेन्सियन के लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में अपनी स्वयं-नियुक्त भूमिका में, क्रॉमवेल ने इंग्लैंड के आम लोगों के लिए लोकतंत्र के सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटिश सम्राटों या उनके पहले के किसी भी अन्य नेता की तुलना में अधिक काम किया। इसी तरह, उन्होंने और जॉन मिल्टन ने

काउंटर-रिफॉर्मेशन के चरम पर प्रोटेस्टेंट यूरोप में वाल्डेन्सियन और उनके कारण के खिलाफ उत्पीड़न की प्रोफ़ाइल को बढ़ाने के लिए किसी भी अन्य गैर-वाल्डेन्सियन की तुलना में अधिक काम किया।

लेकिन हमारे पास यह खजाना मिट्टी के बर्तनों में है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि असाधारण शक्ति ईश्वर की है और हमारी नहीं। एक दिलचस्प फुटनोट, लॉर्ड प्रोटेक्टर के रूप में क्रॉमवेल ने इंग्लैंड पर इस आधार पर शासन किया कि लोगों के लिए क्या अच्छा है और जनता को क्या पसंद है, इस पर काम करना चाहिए। और लगभग पाँच वर्षों तक, उन्होंने लोगों को ईश्वरीयता का भारी आहार जबरन खिलाया।

रविवार के सभी खेलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तथा अनैतिकता के अपराधों को सार्वजनिक रूप से दंडित किया गया। 1640 के दशक में प्यूरिटन-नियंत्रित संसद द्वारा लगाए गए धार्मिक अपेक्षाओं और प्रतिबंधों में क्रिसमस को खुशी और उल्लास के मौसम के रूप में मनाने पर प्रतिबंध शामिल था। यह आंशिक रूप से राष्ट्र में सभी कैथोलिक प्रभाव पर पूर्ण प्रभुत्व प्रदर्शित करने का एक प्रयास था, लेकिन यह लोगों पर सख्त कैल्विनवादी आचार संहिता लागू करने का भी परिणाम था।

1645 में नेसेबी में राजा की सेना पर विजय के परिणामस्वरूप, क्रॉमवेल और उनके वफादार अनुयायियों ने कैथोलिक धर्म में बाधा डालने वाली हर प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसमें क्रिसमस को खुशी के त्योहार के रूप में मनाना भी शामिल था। निम्नलिखित गीत नेसेबी में जीत के बाद के महीनों में लिखा गया था और इसमें न केवल रोमन कैथोलिक नागरिकों का विरोध बल्कि 17वीं सदी के अंग्रेजी प्यूरिटनवाद की तपस्या के प्रति प्रोटेस्टेंट प्रतिरोध की शुरुआत भी शामिल थी। इसे द वर्ल्ड टर्न्ड अपसाइड डाउन कहा जाता है।

मेरी बात सुनो, और तुम सुनोगे, हेरोदेस, सीज़र और कई अन्य लोगों के बाद से इस हज़ार साल तक कोई खबर नहीं आई है, तुमने पहले कभी ऐसा नहीं सुना। पवित्र दिनों का तिरस्कार किया जाता है, नए फैशन तैयार किए जाते हैं, और क्रिसमस को शहर से बाहर निकाल दिया जाता है, फिर भी चलो संतुष्ट रहें, और समय विलाप करता है। आप देखते हैं, दुनिया उलटी हो गई है।

बुद्धिमान लोग हमारे उद्धारकर्ता मसीह के जन्म को देखकर खुश हुए, स्वर्गदूतों ने शुभ समाचार दिया, और चरवाहों ने खुशी मनाई और गीत गाए। सभी ईमानदार लोगों को उनसे उदाहरण लेना चाहिए, हमें अच्छे कानूनों से क्यों बंधे रहना चाहिए? फिर भी हमें संतुष्ट रहना चाहिए, और समय विलाप करेगा। आप देखिए, दुनिया उलटी हो गई है।

आज्ञा दी गई है; हमें आज्ञा का पालन करना चाहिए और पूरी तरह से भूल जाना चाहिए, हे क्रिसमस के दिन, एक हजार लोगों को मार डालो या एक शहर वापस पा लो। हम धन्यवाद देंगे और प्रशंसा करेंगे, आमीन। शराब का बर्तन खनकेगा, और हम दावत करेंगे और पीएंगे, और फिर अजीबोगरीब धारणाएँ बढ़ेंगी।

फिर भी हम संतुष्ट रहें, और समय विलाप करे। आप देखिए, दुनिया उलटी हो गई है। हमारे सरदार और शूरवीर, कुलीन वर्ग भी पुराने फैशन को त्यागना चाहते हैं।

वे द्वार पर एक द्वारपाल नियुक्त करते हैं, और कोई भी व्यक्ति दाहिनी ओर से प्रवेश नहीं कर सकता। वे इसे पाप मानते हैं जब गरीब लोग अंदर आते हैं; आतिथ्य ही डूब जाता है। फिर भी हमें संतुष्ट रहना चाहिए, और समय विलाप करता है।

आप देखिए, दुनिया उलटी हो गई है। सेवा करने वाले लोग बैठकर रोते हैं और सोचते हैं कि अब खाने का समय हो गया है। बटलर अभी भी रास्ते से हट गया है या फिर मेरी महिला के पास चाबी रहेगी।

बेचारा बूढ़ा रसोइया खाने की तलाश में है। अच्छाई कहाँ नहीं मिलती? फिर भी हमें संतुष्ट रहना चाहिए, और समय विलाप करता है। आप देखिए, दुनिया उलटी हो गई है।

अंत में, मैं आपको सही खबर बताऊंगा। क्रिसमस की मौत नेसबी फाइट में हुई। चैरिटी की भी उसी समय हत्या कर दी गई।

जैक डेलट्रॉथ भी, जो मेरा एक दोस्त था, उसी तरह मर गया। भुना हुआ गोमांस और कटा हुआ पाई, सूअर, हंस और कैपोन; कोई क्वार्टर नहीं मिला। फिर भी चलो संतुष्ट रहें और समय शोक मनाए।

आप देखिए, दुनिया उलटी हो गई है। पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर, आमीन। वाल्डेन्सियन के इतिहास के बारे में उनकी शिक्षा में यह महान कार्य है।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 11 है, द लॉर्ड प्रोटेक्टर, ओलिवर क्रॉमवेल।